सफलता की कहानी (महिला कृषक)

आत्मा–चतरा (जिला–चतरा)

किसान का नाम	*सोनी देवी*
पिता/पति का नाम	ललन कुमार वर्मा
ग्राम	घंघरी
पंचायत	कटैया
प्रखण्ड	हंटरगंज
डाक घर	कटैया
पिन कोड	825403
रकवा (Land Holding)	03 एकड़
सिंचित	2 एकड़
असिंचिंत	1 एकड़
मोबाईल नं0	78271991831
सदस्यता यदि किसी समूह में हों	सखी मण्डल।
केन्द्रीय/राजकीय स्कीम का नाम जिसमें कृषक द्वारा प्रयोग किया गया हो।	आत्मा, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन एवं BGREI अन्तर्गत प्रत्यक्षण

सफलता की कहानी 500 शब्दों में टिप्पणी।

मेहनत और सही दिशा में किया गया कार्य अपने मंजिल को प्राप्त करने में आसान बना देती है। मैं सोनी देवी, पति–श्री ललन कुमार वर्मा, ग्राम–घंघरी, पंचायत–कटैया, प्रखण्ड–हंटरगंज, जिला–चतरा की रहने वाली एक लघु किसान परिवार से आती हूँ। मेरा गाँव चतरा जिला से 22 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। मेरे पास कुल 03 एकड़ जमीन है, जिसमें 02 एकड़ भूमि सिंचिंत और 01 एकड़ असिंचित है। मैं जब शादी कर के यहाँ आई थी तो मेरे पति के द्वारा परम्परागत विधि से खेती की जाती थी। मैं भी उनके कार्यो में सहयोग करने लगी। अपने खेत में धान, गेहूँ, मक्का, मसूर, सरसों, सब्जी इत्यादि लगाकर अपने जीवन की नैया को पार लगाने की कोशिश जारी रखी। परन्तु लागत के मुकाबले उत्पादन अच्छा प्राप्त नहीं हो पाता था। जानकारी के अभाव में असंतुलित उर्वकों का प्रयोग एवं कीट–ब्याधियों पर सही नियंत्रण नहीं होने के कारण फसलों को ज्यादा हानि पहुँचता था, जिसका सीधा प्रभाव उत्पादन में देखने को मिलता था। किसी प्रकार खेती से जीविकोपार्जन हो पा रही थी। मेरे गाँव के कृषक मित्र के द्वारा आत्मा के बारे में जानकारी दी गई। जिससे आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक श्री सुधीर कुमार से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री कुमार के द्वारा मेरे यहाँ किसान गोष्ठी के माध्यम से किसानों को खेती की वैज्ञानिक पद्धति की जानकारी उपलब्ध कराई गई। उन्होंने बताया कि फसल को लगाने से पहले बीज का उपचार अवश्य करें। खेती में रासायनिक उर्वरक की मात्रा को कम करके गोबर की खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद इत्यादि का प्रयोग करें। श्री कुमार के निर्देशानुसार मैं अब सभी फसलों को लगाने से पहले कार्बनडाजिम 50% WP के 02 ग्राम दवा प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करके लगाती हूँ। खेत में जमा फॉस्फोरस को क्रियाशील बनाने के लिये पी0एस0बी0 (Phosphorus Sobulized Bacteria) पाउडर उपलब्ध कराये जिसका प्रयोग करके डी0ए0पी0 की मात्रा को कम कर पाई।

वित्तीय वर्ष 2020–21 में BGREI योजना अन्तर्गत गेहूँ की प्रजाति HD-3086 का प्रत्यक्षण लगाने के लिये बीज उपलब्ध कराया गया। जिसका उनके निर्देशानुसार बीजोपचार, पी0एस0बी0 का प्रयोग, पंक्तिबद्ध बोआई मेरे द्वारा की गई साथ ही फसल में समय–समय पर निरीक्षण के दौरान कीटों से फसलों की सुरक्षा संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई तथा क्यूनालफॉस 50% EC और नीम आधारित दवा Neemflex जिसके नियंत्रण के लिये आत्मा द्वारा उपलब्ध कराये गये, जिसका छिड़काव खेत में खड़ी फसल के उपर करके बताया गया। जिसके

फलस्वरूप फसलों में लगने वाला कीट का नियंत्रण आसानी से हो गया। खेत में संतुलित उर्वरक, यूरिया, डी0ए0पी0 और पोटाश के अलावा सूक्ष्म पोषक तत्व बोरॉन का प्रयोग करने के लिये आत्मा कार्यालय से उपलब्ध कराया गया। जिसका प्रयोग पहली बार Top Dressing के रूप में किया, जिससे उसी खेत में 20% उत्पादन ज्यादा प्राप्त हुआ। गेहूँ की प्रजाति HD-3086 का अच्छा उत्पादन प्राप्त हुआ इसलिये इसका बीज इस वर्ष लगाने के लिये मैं पुनः रखी हूँ ताकि इसे बाजार से न खरीदना पड़े।

आत्मा द्वारा सब्जी कीट का प्रत्यक्षण उपलब्ध कराया गया, जिसमें विभिन्न सब्जियों (टमाटर, मिर्चा, मटर, शिमला मिर्च, फूलगोभी, बंदागोभी इत्यादि) के संकर बीज उपलब्ध कराये गये साथ ही लगाने की वैज्ञानिक विधियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराया गया। जिसके फलस्वरूप अब मैं हल्दी, मिर्च, बैंगन, टमाटर, फूलगोभी इत्यादि सब्जियों का उत्पादन मेरे द्वारा वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा की जा रही है। इसके साथ ही गाय व बकरी पालन भी करती हूँ। इससे प्राप्त गोबर, बिछाली, मूत्र इत्यादि पहले बेकार हो जाया करता था, पर मैं इन सभी को अब खेत में प्रयोग करती हूँ जिससे रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम कर पाई हूँ। फलस्वरूप फसल की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है तथा मिट्टी की संरचना में सुधार भी हो पाया है। बैकयार्ड पोल्ट्री के लिये कुछ देशी मुर्गीयाँ पालती हूँ जिसके अण्डे 10/– रू0 प्रति ईकाई बेचकर एक अन्य आय का स्रोत प्राप्त हो जाता है। हमारे घर के पास ही पशु व सब्जी बाजार प्रत्येक सप्ताह लगता है, जिससे बकरे व सब्जी आसानी से घर से ही बिक जाते है। एक बकरा (खस्सी) 6000/– से 8000/– रूपये बिकता है, जो हमारे आय के स्रोत में अन्य लाभ के रूप में प्राप्त होता है। इस प्रकार विभिन्न खेती प्रणाली को समेकित रूप से अपनाने की कोशिश कर रही हूँ जिसका लाभ मुझे मिला है, इससे उत्पादन लागत में कमी आई है।

मैं सखी मण्डल के ग्रुप के सदस्य के रूप में भी जुड़कर अपनी छोटी–छोटी समस्याओं का निदान ग्रुप के माध्यम से कर रही हूँ तथा अन्य सखी बहनों को खेती की नई प्रणालियों के बारे में जानकारी देकर जागृत कर रही हूँ। प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के द्वारा समय–समय पर ग्रुप का प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता रहा है, जिससे एक आत्मबल की प्राप्ति होती है और एक बेहतर कार्य करने के लिये प्रेरणा स्रोत का काम करता है। जिससे मैं अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर पाती हूँ।

आत्मा के जिला, प्रखण्ड एवं पंचायत स्तरीय प्रशिक्षण व किसान मेला में भाग लेती रहती हूँ जिससे अपनी जानकारी को और ज्यादा मजबूत कर पाती हूँ। आज मैं काफी प्रसन्न हूँ। मैं अपने दोनो बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पा रही हूँ तथा खेती से सही पोषण करा रही हूँ। आज परम्परागत खेती से निकलकर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग कर खेती करके अपने में समृद्धि ला पाई हूँ तो इसका पूरा श्रेय आत्मा द्वारा चलाई जा रही योजनाओं और प्रशिक्षणों का रहा है, जिसके कारण आज अपनी खेती और जानकारी में अमूल–चूल परिवर्तन ला पाई हूँ। जिससे मैं आज अपने को एक प्रगतिशील किसान की श्रेणी में खड़ी कर पाई हूँ, इसके लिये आत्मा के दिशा–निर्देशों व योजनाओं का सम्मान करती हूँ तथा आभार व्यक्त करती हूँ।

	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	***गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद***
फसल/कृषि पद्धति	गेहूँ की परम्परागत खेती/ सामान्य पद्धति	गेहूँ की पंक्तिबद्ध बोआई समेकित कृषि प्रणाली व संतुलित उर्वरक का प्रयोग।
फसल का उत्पादन	10.5 क्वि0 प्रति एकड़	16.6 क्वि0 प्रति एकड़
बिक्री मूल्य	16,800/– रू0	26,560/– रू0
Straw (पुआल)	9 क्वि0	11 क्वि0
बिक्री मूल्य	5400/– रू0	6600/– रू0
लागत मूल्य (Input Cost)	7,250/– रू0	9,600/– रू0
मजदूरी लागत	4,000/– रू0	6,000/– रू0
अन्य खर्च	1,200/– रू0	2,200/– रू0
अंतिम बचत	**9,750/– रू0**	**15,360/– रू0**

धान की खेती

मक्का की खेती

मिर्चा की खेती

हल्दी की खेती

बैकयार्ड खेती (मुर्गी पालन)

बकरी पालन

गाय पालन

सब्जी की खेती

BGREI *गेहूँ प्रत्यक्षण* (*प्रजाति-* HD 3086)

सुधीर कुमार
(प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक),
आत्मा चतरा